IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

अयोध्या जिले में माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों का अध्ययन

धर्मेन्द्र प्रताप सिंह [1]
डॉ. रामप्रताप सैनी [2]
[1]शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र विभाग, श्री जे.जे.टी. विश्वविद्यालय, चुड़ेला, झुंझुनूं, राजस्थान
[2]ऐसिसटेंट प्रोफेसर, शिक्षा शास्त्र विभाग, श्री जे.जे.टी. विश्वविद्यालय, चुड़ेला, झुंझुनूं, राजस्थान

सारांश
शिक्षा, लैटिन शब्द 'एजुकेयर' से लिया गया है, जिसका अर्थ है ज्ञान को पोषित करना और उसे आगे लाना। यह एक परिवर्तनकारी यात्रा है जो व्यक्तियों को अपनी क्षमता का पता लगाने के लिए सशक्त बनाती है। इस बीच, मूल्य मानवीय इच्छाओं और आकांक्षाओं को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सैद्धांतिक मूल्य, विशेष रूप से, सत्य और समझ की खोज को उजागर करते हैं, एक अधिक प्रबुद्ध समाज को आकार देने के लिए आलोचनात्मक सोच और प्रतिबिंब को प्रोत्साहित करते हैं। सैद्धांतिक मूल्य–संचालित शोधकर्ता ने अध्ययन को निर्देशित करने के लिए स्पष्ट उद्देश्यों और परिकल्पनाओं को सावधानीपूर्वक तैयार किया। फिर उन्होंने प्रतिभागियों से प्रासंगिक प्रतिक्रियाएँ एकत्र करने के लिए एक संरचित प्रश्नावली तैयार की। डेटा एकत्र करने के बाद, शोधकर्ता ने जानकारी को व्यवस्थित और विश्लेषित करने के लिए व्यवस्थित कोडिंग तकनीकों का इस्तेमाल किया, जिससे निष्कर्षों की व्यापक समझ सुनिश्चित हुई। एक विस्तृत विश्लेषण में, अयोध्या जिले के 150 माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के एक यादृच्छिक नमूने की विभिन्न सांख्यिकीय उपकरणों का उपयोग करके सावधानीपूर्वक जांच की गई। निष्कर्षों ने जनसांख्यिकीय कारकों और इन छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच एक उल्लेखनीय सहसंबंध को उजागर किया, जिससे यह पता चला कि कैसे आयु, लिंग और सामाजिक–आर्थिक स्थिति जैसे चर उनके शैक्षिक परिणामों और सीखने के अनुभवों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं।

कुंजीशब्दः छात्र, नैतिक मूल्य, आत्मविश्वास, माध्यमिक विद्यालय।

परिचय

मनोवैज्ञानिक नैतिक व्यवहार को इस तरह से समझते हैं कि यह रोजमर्रा के व्यक्तियों और मनोविश्लेषकों दोनों के साथ प्रतिध्वनित होता है, जो विवेक की अवधारणा से संबंध स्थापित करता है। लैटिन शब्द श्मॉसश में निहित यह नैतिक ढांचा आंतरिक प्रेरणा के महत्व पर जोर देता है – जो सही है उसे करने की हमारी आंतरिक प्रेरणा। इसमें प्रलोभन का विरोध करने और आंतरिक सिद्धांतों का पालन करने की क्षमता भी शामिल है, जो दर्शाता है कि दैनिक जीवन में हमारे नैतिक निर्णयों और कार्यों को आकार देने के लिए व्यक्तिगत मूल्य और सामाजिक अपेक्षाएँ कितनी गहराई से आपस में जुडी हुई हैं। 1968 में, कोहलबेरी ने नैतिक विचार को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण रूपरेखा प्रस्तुत की, जिसमें बच्चों के अच्छे आचरण के विकास के लिए इसके महत्वपूर्ण संबंध पर जोर दिया गया। उनके शोध से पता चला कि कम आत्मविश्वास वाले बच्चे अक्सर सामाजिक अक्षमता और भावनात्मक अपरिपक्वता की गहरी भावना का अनुभव करते हैं। यह सहसंबंध बताता है कि जब बच्चे आत्म–सम्मान के साथ संघर्ष करते हैं, तो यह सामाजिक परिस्थितियों को प्रभावी ढंग से नेविगेट करने और सकारात्मक व्यवहार के लिए आवश्यक नैतिक तर्क विकसित करने की उनकी क्षमता में बाधा डाल सकता है। इस प्रकार, बच्चों में नैतिक विकास को बढावा देने के लिए आत्मविश्वास को बढावा देना महत्वपूर्ण है।

स्वयं

स्वयं की अवधारणा हमारे अस्तित्व को आकार देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जो हमारे विचारों, भावनाओं और धारणाओं को गहराई से प्रभावित करती है। यह एक लेंस के रूप में कार्य करता है जिसके माध्यम से हम

अपने आस–पास की दुनिया की व्याख्या करते हैं। जीवन में आगे बढते हुए, हम अक्सर आत्मनिरीक्षण करते हैं, अपनी पहचान और व्यक्तिगत विश्वासों पर विचार करते हैं, अंततः एक जटिल, परस्पर जुडे समाज में हमारे अंतःक्रियाओं और अनुभवों का मार्गदर्शन करते हैं।

बच्चे आमतौर पर दो साल की उम्र के आसपास अपने आत्म–बोध को विकसित करना शुरू करते हैं, यह एक महत्वपूर्ण अवधि है जब वे अपने आस–पास की दुनिया को देखना और आत्मसात करना शुरू करते हैं। माता–पिता, दोस्तों और शिक्षकों के साथ बातचीत के माध्यम से, वे अंतर्दृष्टि प्राप्त करते हैं जो उनकी पहचान में योगदान करते हैं। ये सामाजिक अनुभव उनकी आत्म–धारणा को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिससे स्वयं की एक तरल और अनुकूलनीय संरचना बनती है जो रिश्तों, प्रतिक्रिया और उनके सामने आने वाले विविध वातावरण के आधार पर विकसित होती है। आत्म व्यक्तिगत अनुभवों के मानसिक प्रतिनिधित्व से बुना गया एक जटिल ताना–बाना है। इसमें न केवल भौतिक शरीर बल्कि विचारों और सचेत जागरूकता का जटिल जाल भी शामिल है। यह बहुआयामी संरचना किसी व्यक्ति के अनुभवों, भावनाओं और धारणाओं की समग्रता को दर्शाती है, उनकी पहचान को आकार देती है और इस बात को प्रभावित करती है कि वे अपने आस–पास की दुनिया के साथ कैसे बातचीत करते हैं।

आत्मविश्वास

आत्म हमारी सचेत जागरूकता के मूल का प्रतिनिधित्व करता है, जो केंद्रीय केंद्र के रूप में कार्य करता है जहाँ से हम अपने अनुभवों को समझते हैं और उनकी व्याख्या करते हैं। इसके विपरीत, आत्म–अवधारणा एक अधिक जटिल ढांचा है, जिसे समय के साथ विभिन्न जीवन अनुभवों और अंतःक्रियाओं के माध्यम से सावधानीपूर्वक निर्मित किया गया है। यह दर्शाता है कि हम अपने गुणों, क्षमताओं और भूमिकाओं सहित खुद को कैसे देखते हैं। इसके अलावा, आत्म–सम्मान इस गतिशीलता में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जो हमारे भावनात्मक आत्म–सम्मान को दर्शाता है और यह प्रभावित करता है कि हम अपने मूल्य के बारे में कैसा महसूस करते हैं। हैमचेल (1978) इस बात पर जोर देते हैं कि ये तत्व आपस में गहराई से जुडे हुए हैं, जो हमारी समग्र पहचान को आकार देते हैं।

स्कूल में अप्रत्याशित सफलता एक छात्र की आत्म–अवधारणा और अहंकार को महत्वपूर्ण रूप से बढा सकती है, जिससे आत्मविश्वास की गहरी भावना पैदा होती है। यह परिवर्तनकारी अनुभव किसी भी शैक्षिक स्तर पर हो सकता है, प्राथमिक विद्यालय से लेकर उच्च शिक्षा तक, छात्रों को चुनौतियों को स्वीकार करने और नए जोश और उत्साह के साथ अपने शैक्षणिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सशक्त बनाता है।

एक मजबूत, सकारात्मक आत्म–अवधारणा वास्तविक खुशी को बढावा देती है, आत्मविश्वास को बढाती है, तथा चिंता और असुरक्षा की भावनाओं को काफी हद तक कम करती है, जिससे व्यक्ति उत्साह और लचीलेपन के साथ अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकता है। हमाचेक (1978)

आत्म–विश्वास की परिभाषा

आत्मविश्वास व्यक्ति की अपनी क्षमताओं में सशक्त विश्वास है, जो व्यक्ति को चुनौतियों का डटकर सामना करने और निर्णायक कार्रवाई करने में सक्षम बनाता है। यह आंतरिक शक्ति न केवल उन्हें जीवन में अपने खुद के अनूठे रास्ते बनाने में सक्षम बनाती है, बल्कि उन्हें कई तरह की परिस्थितियों से निपटने के लिए आवश्यक लचीलापन भी प्रदान करती है, जिससे व्यक्तिगत विकास और पूर्णता की भावना को बढावा मिलता है।

आत्मविश्वास के शैक्षिक निहितार्थ

आत्मविश्वास हमारी आत्म–अवधारणा को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, क्योंकि यह सीधे हमारे दृढ संकल्प और अंततः हमारी सफलता को प्रभावित करता है। जिस तरह से हम खुद को समझते हैं, वह हमारे कार्यों, निर्णयों और जीवन में समग्र उपलब्धियों को गहराई से प्रभावित करता है, हमारी क्षमता का मार्गदर्शन करता है।

अध्ययन की आवश्यकता और महत्व

आज की युवा पीढी खुद को एक ऐसे चौराहे पर पाती है, जहाँ सामाजिक सद्भाव के पोषण के बजाय वित्तीय सुरक्षा चुनने की दुविधा से जूझना पडता है। सफलता की अपनी अथक खोज में, वे अक्सर आधुनिक उपलब्धियों के आकर्षण से विचलित हो जाते हैं, और अपने पूर्वजों द्वारा बनाए गए पारंपरिक मूल्यों और आदर्शों को पीछे छोड देते हैं। नतीजतन, वे नकारात्मक भावनाओं से ग्रसित होने का जोखिम उठाते हैं, भौतिक संपदा के लिए निरंतर दौड में फंस जाते हैं, जबकि समुदाय और संबंध का सार पृष्ठभूमि में फीका पड जाता है।

साहित्य पुनरावलोकन

रविन्द्रनाथ.के. (2003), अध्ययन ने शैक्षिक प्राथमिकताओं और शक्तियों में लिंग अंतर के बारे में दिलचस्प जानकारी उजागर की। इसने इस बात पर प्रकाश डाला कि लडके सैद्धांतिक अवधारणाओं, अर्थशास्त्र और राजनीतिक सिद्धांतों जैसे क्षेत्रों में सफल होते हैं, खासकर जब वे तकनीकी शिक्षा में लगे होते हैं। इसके विपरीत, लडकियाँ अक्सर अपनी रचनात्मकता और कलात्मक झुकाव का प्रदर्शन करते हुए सौंदर्य क्षेत्र की ओर आकर्षित होती हैं।

वर्मा धर्मेंद्र (2005), द्वारा किए गए अध्ययन में, रोहिलखंड कॉलेज में युवाओं के बीच मूल्य पैटर्न की सावधानीपूर्वक जांच की गई थी। शोध से पता चला कि कला के छात्र सबसे अलग थे, उन्होंने सामाजिक मूल्यों के उच्चतम स्तर को प्रदर्शित किया। इसके विपरीत, विज्ञान के छात्रों ने प्राथमिकताओं के एक अलग सेट का प्रदर्शन किया, जो शैक्षणिक विषयों पर आधारित मूल्य प्रणालियों में उल्लेखनीय विचलन को दर्शाता है। यह व्यावहारिक विश्लेषण कॉलेज के छात्रों के विविध सामाजिक अभिविन्यासों पर प्रकाश डालता है।

बाजपेयी, सुनील (2007), द्वारा किए गए अध्ययन में, मध्य प्रदेश में हाई स्कूल के छात्रों द्वारा रखे गए मूल्यों की गहन जांच की गई थी। इस शोध में 1,070 छात्रों का एक बडा नमूना शामिल था, जिसमें स्थान और लिंग जैसे चरों पर सावधानीपूर्वक विचार किया गया था। इस अध्ययन के निष्कर्ष विशेष रूप से चौंकाने वाले थेय यह सामने आया कि शहरी क्षेत्रों में रहने वाले छात्रों ने अपने ग्रामीण समकक्षों की तुलना में सैद्धांतिक, आर्थिक, सौंदर्य और सामाजिक मूल्यों के प्रति काफी मजबूत झुकाव प्रदर्शित किया। इससे पता चलता है कि पर्यावरणीय कारक युवा व्यक्तियों के मूल्यों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

वर्मा बी.पी और काली राम (2006), के अध्ययन में पाया कि ग्रामीण और शहरी किशोर किस तरह से मूल्यों को प्राथमिकता देते हैं, इसमें दिलचस्प अंतर है। ग्रामीण किशोर सैद्धांतिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक और सौंदर्य मूल्यों को महत्वपूर्ण महत्व देते हैं, जो उनके घनिष्ठ समुदायों और सांस्कृतिक विरासत को दर्शाता है। इसके विपरीत, शहरी किशोरों ने अपने मूल्यों को अलग–अलग तरीके से रैंक किया, जो उनके तेज–तर्रार, गतिशील वातावरण के अलग–अलग प्रभावों को उजागर करता है। यह भिन्नता उन अलग–अलग अनुभवों और प्राथमिकताओं को रेखांकित करती है जो इन युवा व्यक्तियों के रहने और बढने के अलग–अलग संदर्भों द्वारा आकार लेते हैं।

शर्मा ए.पी. (2006), ने अपने अध्ययन में समाज में मूल्य क्षरण के मुद्दे को संबोधित करने के महत्वपूर्ण महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने तर्क दिया कि मूल्यों की गहरी समझ को बढावा देना आवश्यक है, विशेष रूप से बुजुर्गों और शिक्षकों जैसे प्रभावशाली व्यक्तियों के मार्गदर्शन के माध्यम से। उनके ज्ञान और अनुभव का उपयोग करके, हम मूल्यों की एक मजबूत नींव विकसित कर सकते हैं जो स्थायी होगी और भविष्य की पीढियों को सकारात्मक रूप से आकार देगी।

शोध उद्देश्य

वर्तमान अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित हैं।

1. माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के नैतिक मूल्यों का पता लगाना।
2. अयोध्या जिले के माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के आत्मविश्वास का पता लगाना।
3. लिंग के आधार पर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के नैतिक मूल्यों में अंतर का पता लगाना।

शोध परिकल्पनाऐं

वर्तमान अध्ययन की परिकल्पना इस प्रकार तैयार की गई है।

- लड़कों एवं लड़कियों के नैतिक मूल्यों के स्तर में अंतर नहीं होगा।
- उत्तरदाता समुदाय/जाति के आधार पर अपने नैतिक मूल्यों में भिन्न नहीं होते हैं।

शोध विधि

अध्ययन जनसंख्या

किए गए शोध में पाया गया कि सटीक परिणामों के लिए कम से कम 150 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का नमूना आकार आवश्यक था। इन प्रतिभागियों को यादृच्छिक चयन विधियों का उपयोग करके चुना गया था, जिसमें छात्र आबादी का व्यापक और प्रतिनिधि अध्ययन सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न भौगोलिक स्थानों और अन्य प्रासंगिक कारकों को ध्यान में रखा गया था।

आंकड़ों का प्रसंस्करण

आंकड़ों के विश्लेषण में व्यापक दृष्टिकोण शामिल था, जिसमें वर्णनात्मक सांख्यिकी जैसे कि माध्य, मानक विचलन (एसडी), माध्य की मानक त्रुटि (एसईएम), और टी–अनुपात का उपयोग किया गया था। इसके अतिरिक्त, डेटासेट से सार्थक निष्कर्ष और अंतर्दृष्टि निकालने के लिए सहसंबंध विश्लेषण सहित अनुमानात्मक तकनीकों का उपयोग किया गया था।

आंकड़ों का विश्लेषण

तालिका संख्या 1 – उत्तरदाताओं के नैतिक मूल्यों के स्तर के टी परीक्षण का लिंग के आधार पर वितरण

लिंग	आवृति	औसत	मानक विचलन	टी–मान
लड़के	100	15.7	3.9	0.60*
लड़कियां	100	15.4	3.5	

परिकल्पना परीक्षण 1: लड़कों एवं लड़कियों के नैतिक मूल्यों के स्तर में अंतर नहीं होगा।

0.60 का परिकलित टी–मान सांख्यिकीय महत्व के स्तर तक नहीं पहुँचता है। परिणामस्वरूप, हम शून्य परिकल्पना को स्वीकार करते हैं, जो यह दर्शाता है कि वैकल्पिक परिकल्पना का समर्थन करने के लिए पर्याप्त साक्ष्य नहीं हैं। इसलिए, हम निष्कर्ष निकालते हैं कि इस संदर्भ में कोई सार्थक अंतर या प्रभाव मौजूद नहीं है।

तालिका संख्या 2 – समुदाय के आधार पर उत्तरदाताओं के नैतिक मूल्यों के स्तर का एफ–मान

समुदाय	आवृति	औसत	मानक विचलन	एफ–मान
सामान्य	107	15.5	3.7	1.92*
पिछड़ा वर्ग	11	14.2	4.6	
अ.पि.वर्ग	71	15.4	3.4	
अ.जा./अ. ज.जा.	11	17.8	4.6	
कुल	200	15.6	3.7	

परिकल्पना परीक्षण 2: अध्ययन से पता चला कि हाई स्कूल के छात्रों के नैतिक मूल्य विभिन्न समुदायों में एक समान बने हुए हैं, और कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया है। विश्लेषण के दौरान गणना किए गए एफ–मूल्य से इस निष्कर्ष का समर्थन होता है, जो बताता है कि स्थान और सामुदायिक पृष्ठभूमि जैसे कारक इन किशोरों की नैतिक मान्यताओं को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका नहीं निभाते हैं।

तालिका संख्या 3 – उत्तरदाताओं के नैतिक मूल्यों एवं आत्मविश्वास के बीच सहसंबंध

चर	नैतिक मूल्य
आत्म विश्वास	0.281**

**0.01 के स्तर पर महत्त्वपूर्ण

0.281 का सहसंबंध गुणांक विश्लेषण किये जा रहे दो चरों के बीच उल्लेखनीय सकारात्मक संबंध को दर्शाता है, जो यह दर्शाता है कि जैसे–जैसे एक चर बढता है, वैसे–वैसे दूसरे चर में भी वृद्धि होती है।

निष्कर्ष

शोधकर्ता ने अध्ययन को दिशा देने के लिए सावधानीपूर्वक स्पष्ट उद्देश्य तैयार किए और परीक्षण योग्य परिकल्पनाएँ तैयार कीं। मूल्यवान डेटा एकत्र करने के लिए, एक व्यापक प्रश्नावली तैयार की गई थी। यादृच्छिक नमूनाकरण पद्धति का उपयोग करते हुए, शोधकर्ता ने 150 उच्चतर माध्यमिक छात्रों के एक विविध समूह से सफलतापूर्वक प्रतिक्रियाएँ एकत्र कीं और कोडित कीं, जिससे विश्लेषण के लिए एक मजबूत आधार सुनिश्चित हुआ। सांख्यिकीय विश्लेषणों ने हाई स्कूल के छात्रों की जनसांख्यिकी और उनके नैतिक मूल्यों और आत्मविश्वास के स्तरों के बीच उल्लेखनीय सहसंबंध को उजागर किया। इससे पता चलता है कि पृष्ठभूमि, जातीयता और सामाजिक–आर्थिक स्थिति जैसे कारक इन व्यक्तिगत विशेषताओं के विकास को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकते हैं।

संदर्भ

1. **बोनिन, जोम्मी, एस. (1990),** "ईसाई और पब्लिक स्कूल के छात्रों की मूल्य वरीयता का एक संयोजन" शोध प्रबंध सार अंतर्राष्ट्रीय, खंड 52, संख्या 3. सितंबर
2. **ब्रॉवर, फ्लोरेंस बी. (1971),** "मूल्य और पीढी का अंतर" जूनियर कॉलेज के नए छात्र और शिक्षक" अमेरिकन एसोसिएशन ऑफ जूनियर कॉलेज मोनोग्राफ, नंबर 11, जून 1971।
3. **बुच, एम.बी. (एड.) (1991),** "शिक्षा में अनुसंधान का चौथा सर्वेक्षण", नई दिल्ली प्रकाशन विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद।
4. **फ्रीमैन एफ.एस. (1962),** "मनोवैज्ञानिक परीक्षण का सिद्धांत और अभ्यास, न्यूयॉर्क रिनहार्ट और विंस्टन",
5. **गौर आरएस, (1975).** "राजस्थान राज्य के हाई स्कूल के छात्रों के मूल्यों और धारणा का एक अध्ययन और सीखने के साथ उनका संबंध", पीएचडी थीसिस राजस्थान विश्वविद्यालय"।
6. **गौर, जे.एस. ठुकराल, सी.एम., जैन, वी.के. और सुनीता शर्मा (1984)** "अनुसूचित और गैर–अनुसूचित जाति के हाई स्कूल के लडकों का मूल्य और करियर का आत्मविश्वास"।
7. **लूरी, एम.ए. (1937),** "कारक विश्लेषण के तरीकों द्वारा स्प्रिंगर के मूल्य प्रकारों का एक अध्ययन", जर्नल्स ऑफ सेल्फ–कॉन्फिडेंस साइकोलॉजी खंड 8, पृष्ठ.17.
8. **मार्गेनौ, एच, (1959),** "मास्लो ए.एच. (एड.) में मूल्य सिद्धांत के वैज्ञानिक आधार, मानव मूल्यों में नया ज्ञान", हार्पर और रोज प्रकाशन, आईएनसी, न्यूयॉर्क।
9. **मैक्फी. आर.एफ. (1959),** "व्यक्तिगत मूल्य, शैक्षिक दृष्टिकोण और स्थानीय स्कूल अनुमोदन", प्रशासक की नोट बुक.7, पृष्ठ.1, अप्रैल।
10. **मोकेर्जी, आर.के. (1964),** "मूल्यों के आयाम", जॉर्ज एलन और अनविन लिमिटेड, रस्किन हाउस, म्यूजियम सेंट., लंदन।
11. **नांगिया एस.बी और एन. वेंकटैया (1998),** "कुछ चयनित चर के संबंध में उच्च विद्यालय के विद्यार्थियों का मूल्य", पीएचडी थीसिस अन्नामलाई विश्वविद्यालय।